मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

स्नातक पाठ्यक्रम

विषय : प्राकृत

(Based on National Education Policy 2020)

संकाय – मानविकी

2023– 2024 से प्रभावी

सेमेस्टर प्रणाली

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
स्नातक पाठ्यक्रम, विषय : प्राकृत
पाठ्यक्रम का महत्त्व एवं उपयोगिता

प्राकृत भाषा एवं साहित्य के अध्ययन की उपयोगिता के कतिपय बिन्दु निम्न है-

- वैदिक युग में प्राकृत भाषा लोकभाषा थी। उसमें रूपों की बहुलता एवं सरलीकरण की प्रवृत्ति थी। महावीर युग तक आते-आते प्राकृत ने अपने को इतना समृद्ध और सहज किया कि यह और सदाचार की भाषा बन सकी।
- सम्राट अशोक के समय में प्राकृत जनभाषा के रूप में इतनी प्रतिष्ठित थी कि उसे राज्य भाषा होने का गौरव भी प्राप्त हुआ है। ई.पू. 300 से लेकर 400 ईस्वी तक इन सात सौ वर्षों में लगभग दो हजार अभिलेख प्राकृत में लिखे गये हैं।
- खारबेल द्वारा हाथीगुम्फा में प्राकृत एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख ने अपने देश भारत वर्ष का नाम 'भरध-वस' सर्वप्रथम प्राचीनतम उल्लेख के रूप में मिलता है।
- भारतीय संस्कृति, समाज एवं पारिवारिक जीवन को जानने/समझने का एक मात्र आधार भाषा होती है, क्योंकि प्राकृत भाषा में निबद्ध साहित्य में हमारे पूर्वजों, ऋषि-मुनियों और तीर्थंकर महापुरुषों के नैतिकपूर्ण संस्कार, रीति-नीति, व्यवहार आदि सभी बातें हमें कहीं-न-कहीं हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक कर्त्तव्यों की ओर प्रेरित कराने में सक्षम हैं।
- प्राकृत भाषा में रचित साहित्य में ऋषि-मुनियों एवं तीर्थंकर महापुरुषों का वर्णन धर्म की ओर आकर्षित करता है। इनके जीवन-चरित के माध्यम से हम इहलोक से मोक्ष तक यात्रा करने में समर्थ हो सकते हैं।
- जैन आगम प्राकृत साहित्य में वर्णित सामुद्रिक यात्राएँ जो हमें पुरुषार्थ की ओर अग्रसर करती हैं। जहाँ नायक अपनी प्रतिभा और बुद्धि कौशल व साहस एवं रणकौशल से कठिन-कठिन परिस्थितियों से निजात पा लेता है। प्राकृत साहित्य के माध्यम से ही हम यह जानकर व्यापारकौशल पा सकते हैं।- यथा देशाटन का वर्णन कुवलमालाकहा व णायकुमारचरिउ में देखा जा सकता है।

उक्त बिन्दूओ के अतिरिक्त भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्य बहुमूल्यों विषयों की जानकारी भी हो सकेगी।

Prakrit in B.A. Program : Semester wise course types, Course codes, Course title, Delivery type, Workload, Credits, Marks of Examination, and Remarks if any.

Level	Sem	Course Type	Course Code	Course Title	Delivery Type			Total Hours	Credit	Internal Assessment	EoS Exam	M.M.	Remark
					L	T	P						
5	I	**DCC**	PKT5000T	प्राकृत काव्य एवं व्याकरण	5	1	-	90	6	20	80	100	
		AECC-1		As per University Common Scheme					2				
	II	**DCC**	PKT5001T	प्राकृत कथा एवं चरित	5	1	-	90	6	20	80	100	
		AECC-2		As per University Common Scheme					2				
Exit with B.A. Certificate course (with 4 Credit in SEC)													
6	III	**DCC**	PKT6002T	आगम साहित्य एवं आर्ष प्राकृत	5	1	-	90	6	20	80	100	
		SEC-1	SEH6300T	Communicative English					2				
	IV	**DCC**	PKT6003T	प्राकृत शिलालेख	5	1	-	90	6	20	80	100	
		SEC-2	SEH6318T	जैन आगमों का मानवता को सन्देश	1	1	-	30	2	20	80	100	
Exit with B.A Diploma													

7	**V**	**DSE**	PKT7100T	सट्टक एवं मुक्तक साहित्य	5	1	-	90	6	20	80	100	
			PKT7101T	सामायिक एवं ध्यान : चिंतन और प्रविधि									
		SEC-3	SEH7319T	प्राकृत साहित्य में पुरातत्त्व एवं उसका ऐतिहासिक-सामाजिक अध्ययन	1	1	-	30	2	20	80	100	.
	VI	**DSE**	PKT7102T	प्राकृत साहित्य में जीवनमूल्य शिक्षा	5	1	-	90	6	20	80	100	
			PKT7103T	प्राकृत साहित्य की उपादेयता एवं समसामयिक सन्दर्भ									
		SEC-4	SEH7320T	भारतीय भाषाओँ के विकास क्रम में प्राकृत	1	1	-	30	2	20	80	100	
Exit with B.A. Degree													

A information regarding Codes :

DCC extends for Discipline Centric Core course

DSE extends for Discipline Specific Elective Course

SEC extends for Skill Enhancement Course (Prakrit SEH 318 to 323)

AECC extends for Ability Enhancement Compulsory Course

बी. ए. प्राकृत प्रथम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT5000T
पाठ्यक्रम क्रमांक	I
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत काव्य एवं व्याकरण
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	NHEQF Level 4.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	6 credits
पाठ्यक्रम का प्रकार	Discipline Centric Core course (DCC) in Prakrit
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	75 (60 Lectures+ 15 formative and Diagnostic Assessment) and 15 tutorials.
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	Foundation level (Equivalent to 10+2)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	1. प्राकृत भाषा का आधारभूत ज्ञान का अध्ययन करेंगे। 2. इस पत्र में प्राकृत भाषा में रचित कथाकाव्य एवं महाकाव्यों काअध्ययन करेंगे। 3. प्राकृत साहित्य की विधाओं के बारे में अध्ययन करेंगे। 4. प्राकृत भाषा के संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्त के सामान्य नियम एवं प्रयोग का अध्ययन करेंगे।

पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को विद्यार्थियों को प्राकृत भाषा का आधारभूत ज्ञान प्राप्त होगा। 2. प्राकृत भाषा में रचित कथाकाव्य एवं महाकाव्यों की समृद्धता का ज्ञान होगा। 3. प्राकृत साहित्य की कथा एवं महाकाव्य विधाओं की जानकारी होगी। 4. प्राकृत की कविता कैसे प्रशंसित होती है? यह समझ विकसित होगी। 5. प्राकृत भाषा के संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्त के सामान्य नियम एवं प्रयोग का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम		**Study Hours 90**
इकाई- I	प्राकृत भाषा का परिचय, विकास क्रम एवं प्रमुख भेद (अर्धमागधी, मागधी, शौरसैनी, पालि, पैशाची, अपभ्रंश) का परिचय	18
इकाई- II	भविष्यदत्त कहा - णाणपंचमी कहा (महेश्वरसूरी) का परिचय - गाथा 1 से 60	18
इकाई- III	लीलावई कहा (कोउहल) का परिचय - गाथा 1 से 32	18
इकाई- IV	प्राकृत काव्य साहित्य का संक्षिप्त परिचय एवं पठित ग्रंथों पर समान्य प्रश्न	18
इकाई- V	प्राकृत भाषा में संज्ञा, सर्वनाम एवं क्रियारूप का सामान्य ज्ञान एवं अनुवाद (प्राकृत स्वयं शिक्षक - पाठ 1 से 60)	18
सहायक पुस्तकें	1. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीशचन्द जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 1961 2. भविस्सदत्तकव्वं - सं. डॉ. राजाराम जैन, आरा, 1985 3. प्राकृत मार्गोपदेशिका - पं. बेचरदास दोशी, गुर्जर ग्रन्थरत्न कार्यालय, अहमदाबाद – 1959 4. प्राकृत काव्यमंजरी - डॉ. प्रेम सुमन जैन, जयपुर 1982 5. प्राकृत भारती - 1, आगम संस्थान, उदयपुर, 1991 6. प्राकृत प्रदीप – डॉ. ज्योतिबाबू जैन, उदयपुर, संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश अध्ययन अनुसन्धान केंद्र, सांगानेर, जयपुर- 2023	

बी. ए. प्राकृत द्वितीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT5001T
पाठ्यक्रम क्रमांक	II
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत कथा एवं चरित
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	NHEQF Level 4.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	6 credits
पाठ्यक्रम का प्रकार	Discipline Centric Core course (DCC) in Prakrit
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	75 (60 Lectures+ 15 formative and Diagnostic Assessment) and 15 tutorials.
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	Foundation level (Equivalent to 10+2)
पाठ्यक्रम उद्देश्य	1.प्राकृत भाषा में रचित कथा एवं चरित साहित्य अतिसमृद्ध है। इन दोनों विधाओं में लगभग चौथी–पाँचवीं शताब्दी से साहित्य लिखा जाता रहा है। आरामसोहाकहा, चउपन्नमहापुरिसचरियं, कुम्मापुत्तचरियं प्राकृतसाहित्य का एक प्रमुख ग्रन्थ हैं, जिनके कुछ अंशों का अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। 2. इसके साथ ही प्राकृत कथा एवं चरित विधाओं के बारे में सामान्य अध्ययन करेंगे। इससे विद्यार्थियों को प्राकृत भाषा में रचित कथा एवं चरित साहित्य की समृद्धता का ज्ञान होगा।

पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को प्राकृत कथासाहित्य की परम्परा का ज्ञान एवं कथाओं में वर्णित लोकजीवन एवं चित्रित जीवन का ज्ञान होगा। 2. प्राकृत भाषा में रचित कथा एवं चरित साहित्य की समृद्धता का ज्ञान होगा । 3. प्राकृत कथा एवं चरित विधाओं की जानकारी होगी। 4. प्राकृत साहित्य की लोककथा अगडदत्तचरियं का ज्ञान होगा ।	
पाठ्यक्रम		**Study Hours 90**
इकाई- I	आरामसोहाकहा (संघ तिलकगणि), सम्पा. डॉ. राजाराम जैन - (गाथा - 21 तक के गधांश अनुच्छेद 1 से 44 तक)	18
इकाई- II	चउपन्नमहापुरिसचरियं (शीलंकाचार्य) में से मुणिचंदकहाणयं (1 से 20 पैराग्राफ), सम्पा. डॉ. के. आर. चन्द्रा, अहमदाबाद	18
इकाई- III	लोककथा – अगडदत्तचरियं (देवेन्द्रगणि), सम्पा. डॉ. राजाराम जैन (गाथा 1-60 तक)	18
इकाई- IV	कथा एवं चरित साहित्य का संक्षिप्त परिचय एवं सामान्य प्रश्न	18
इकाई- V	पठित ग्रंथों की समीक्षा (इस प्रश्नपत्र में निर्धारित ग्रन्थों की विषयवस्तु, विशेषताओं, चरित्र-चित्रण एवं कवि आदि पर सामान्य प्रश्न।	18
सहायकपुस्तकें	1. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी- 2014 2. आरामसोहाकहा, सम्पा. राजाराम जैन, आरा, 1989 3. अगडदत्तचरियं - सम्पा. राजाराम जैन, आरा 4. मुणिचन्दकहाणयं, सम्पा. डॉ. के. आर. चन्द्रा, भारत प्रकाशन, अहमदाबाद 5. प्राकृतभारती– 1, प्राकृत आगम संस्थान, उदयपुर, 1991 6. प्राकृतप्रदीप– डॉ. ज्योतिबाबू जैन, संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश अध्ययन अनुसन्धान केंद्र, सांगानेर, जयपुर- 2023	

Qualified for Intermediate level

बी. ए. प्राकृत तृतीय सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT6002T
पाठ्यक्रम क्रमांक	III
पाठ्यक्रम का नाम	आगम साहित्य एवं आर्ष-प्राकृत
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	NHEQF Level 5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	6 credits
पाठ्यक्रम का प्रकार	Discipline Centric Core course (DCC) in Prakrit
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	75 (60 Lectures+ 15 formative and Diagnostic Assessment) and 15 tutorials.
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	Intermediate level
पाठ्यक्रम उद्देश्य	1. इस पत्र में जैनआगम की विशेषतायें एवं जैनआगम में वर्णित आचार एवं नीतिपरक शिक्षण का अध्ययन करेंगे । 2. अर्धमागधी प्राकृत भाषा में रचित णायधम्मकहा, उत्तराध्ययनसूत्र एवं वसुनंदिश्रावकाचार के कुछ अंशों का अध्ययन करेंगे । 3. प्राकृत शिलालेखों के बारे में सामान्य अध्ययन करेंगे। 4. अर्धमागधी एवं शौरसेनी आगम साहित्य का अध्ययन करेंगे।

पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को इस पत्र में जैनआगम की विशेषतायें एवं जैनआगम में वर्णित आचार एवं नीतिपरक तथ्यों का ज्ञान होगा । 2. अर्धमागधी प्राकृत भाषा का परिज्ञान होगा । 3. वसुनंदि श्रावकाचार के अंशों के अध्ययन से जीवन के लिए अहितकारी मद्य आदि वस्तुओं का ज्ञान होगा । 4. प्राकृत शिलालेखों के बारे में सामान्य ज्ञान होगा । 5. अर्धमागधी एवं शौरसेनी आगमसाहित्य की सामान्य जानकारी होगी।

पाठ्यक्रम		**Study Hours 90**
इकाई- I	णायाधम्मकहा (4 एवं 6 अध्ययन)	18
इकाई- II	उत्तराध्ययन सूत्र (विनयसुत्तं 1 - 17 गाथाएं) - (रहनेमिज्जं 1 - 49 गाथाएं)	18
इकाई- III	वसुनंदिश्रावकाचार (गाथा 60 से 87 एवं 101 से 111 तक)	18
इकाई- IV	षट्खण्डागम लेखन कथा एवं षट्खण्डागम का सामान्य परिचय	18
इकाई- V	अर्धमागधी एवं शौरसेनी प्राकृत भाषा की सामान्य विशेषताऐं एवं अर्धमागधी की वाचनाएँ	18
सहायकपुस्तकें	1. प्राकृत साहित्य का इतिहास- डॉ. जगदीशचन्द जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी – 1961 2. प्राकृत काव्यसौरभ - संम्पा. डॉ. प्रेम सुमन जैन, राजस्थान प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर – 2021 3. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ नेमीचंद शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी- 2014 4. प्राकृत काव्य प्रसून – डॉ. ज्योति बाबू जैन, जैन संस्कृति शोध संस्थान, इंदौर – 2020	

बी. ए. प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT6003T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत शिलालेख
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	NHEQF Level 5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	6 credits
पाठ्यक्रम का प्रकार	Discipline Centric Core course (DCC) in Prakrit
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	75 (60 Lectures+ 15 formative and Diagnostic Assessment) and 15 tutorials.
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	Intermediate level
पाठ्यक्रम उद्देश्य	1. प्राकृत भाषा में रचित ऐतिहासिक पुरासंपदा का अध्ययन करेंगे । 2. इस पत्र में सम्राट अशोक, सम्राट खारवेल एवं घटयाल अभिलेखों का अध्ययन करेंगे ।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. ऐतिहासिक विकासक्रम की जानकारी एवं महापुरूषो के अवदान को समझा जा सकेगा । 2. शिलालेखो के अध्ययन से भारतीय पुरासंपदा का प्रमाणिक ज्ञान होगा ।

पाठ्यक्रम		Study Hours 90
इकाई- I	प्राकृत के प्रमुख अभिलेखों का परिचय	18
इकाई- II	अशोक के 1 से 5 अभिलेखों (गिरनारपाठ) का अध्यन	18
इकाई- III	सम्राट खारवेल के शिलालेख का परिचय एवं महत्ता	18
इकाई- IV	घटयाल अभिलेख का परिचय एवं महत्ता (गाथा6-20)	18
इकाई- V	शिलालेख की महत्ता और उपयोगिता, ऐतिहासिकता और सामाजिकता एवं जनउपयोगी कार्यो का परिचय	18
सहायकपुस्तकें	1. प्राकृत साहित्य का इतिहास- डॉ. जगदीशचन्द जैन, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी – 1961 2. जैन पाण्डुलिपि एवं शिलालेख एक परिशीलन – प्रो. राजाराम जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली 3. जैन शिलालेख संग्रह - डॉ. हीरालाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली 4. प्राकृत काव्य प्रसून – डॉ. ज्योतिबाबू जैन –जैनसंस्कृति शोध संस्थान, इंदौर 2020 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य –राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मंडल, जयपुर	

बी. ए. प्राकृत चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	SEH6318T
पाठ्यक्रम क्रमांक	IV
पाठ्यक्रम का नाम	जैन आगमों का मानवता को सन्देश
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	NHEQF Level 5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	2 credits
पाठ्यक्रम का प्रकार	Skill Enhancement Course
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	15 Lectures and 15 tutorials.
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	Intermediate level
पाठ्यक्रम उद्देश्य	1. प्राकृत आगमों में वर्णित सिद्धांत मानवता के लिए निश्चित ही हितकारी है। इन प्रसंगों का अध्ययन करेंगे।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. आगमो में वर्णित सिद्दांतो को समझा समझा जा सकेगा । 2. आगमो के अध्ययन से भारतीय साहित्य में जैन सिद्धांतों की उपयोगिता का प्रमाणिक ज्ञान होगा ।

पाठ्यक्रम		Study Hours 90
इकाई- I	जैन आगमो में वर्णित सिद्धांतों का सामान्य परिचय	18
इकाई- II	अहिंसा का स्वरुप एवं विश्लेषण	18
इकाई- III	अपरिग्रह का स्वरुप एवं विश्लेषण	18
इकाई- IV	अनेकांत और स्याद्वाद का स्वरुप एवं विश्लेषण	18
इकाई- V	जैन सिद्धांतों का मानवता को सन्देश-परक अध्ययन	18
सहायकपुस्तकें	1. जैन धर्म - डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री, प्राच्य श्रमण भारती , मुजफ्फरनगर, 2012 ई. 2. जैन दर्शन: मनन और मीमांसा - मुनि नथमल 3. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगदीश चन्द्र जैन, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, 2002 ई 4. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान - डॉ. हीरालाल जैन, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल 1975 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य -राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मंडल, जयपुर 6. जैन आगम साहित्य: मनन और मीमांसा - आचार्य देवेन्द्र मुनि शास्त्री, श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय, उदयपुर – 2012 7. इन्ट्रोडक्शन टू अर्धमागधी - डॉ. ए. एम. घाटगे, स्कूल एंड कॉलेज बुक स्टाल, कोल्हापुर - 1981	

Qualified for High level

बी. ए. प्राकृत पंचम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT7100T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V(A)
पाठ्यक्रम का नाम	सट्टक एवं मुक्तक साहित्य
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	NHEQF Level 5.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	6 credits
पाठ्यक्रम का प्रकार	Discipline Specific Elective course (DSE) in Prakrit
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	75 (60 Lectures+ 15 formative and Diagnostic Assessment) and 15 tutorials.
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	High level
पाठ्यक्रम उद्देश्य	1. प्राकृतसाहित्य में सट्टकों का महत्वपूर्ण स्थान है। कर्पूरमंजरी प्राकृत सहित्य की सट्टकविधा का एक प्रमुख ग्रन्थ है, जिसका अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। 2. नाटकों में प्रयुक्त प्राकृत भाषा का अध्ययन करेंगे। प्राकृत व्याकरण के स्वर, व्यंजन परिवर्तनों का अध्ययन भी इस पत्र के द्वारा किया जायेगा।

पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को भारतीयसाहित्य की एक श्रेष्ट काव्यविधा का ज्ञान, जिससे विद्यार्थियों में काव्यसृजन की क्षमता का विकास हो सकेगा 2. सट्टक विधा का ज्ञान होगा एवं विद्यार्थियों में साहित्यिक रूचि जागृत होगी एवं कर्पूरमंजरी के अध्ययन से साहित्य की सौन्दर्यानुभूति प्रकट होगी। 3. नाटकों में प्रयुक्त प्राकृत भाषाओं का ज्ञान होगा । विद्यार्थियों में प्राकृत व्याकरण की समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम		**Study Hours 90**
इकाई- I	सट्टक का स्वरूप एवं प्राकृत सट्टक साहित्य	18
इकाई- II	कर्पूरमंजरी (राजशेखर) प्रथमजवनिका (विचक्षणा – विदूषक की कलहवार्ता) एवं कर्पूरमंजरी की कथावस्तु	18
इकाई- III	संस्कृत नाटकों में प्रयुक्त प्राकृतों भाषा का प्रयोग एवं समीक्षा	18
इकाई- IV	गाहारयणकोस (जिनेश्वरसूरी) – गाथा 19 से 29 (काव्यप्रशंसा) एवं विषयवस्तु	18
इकाई- V	कर्पूरमंजरी का मूल्यांकन, कवि राजशेखर आदि पर सामान्य प्रश्न)	18
सहायकपुस्तकें	1. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी – 2014 2. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी – 1961 3. प्राकृत प्रवेशिका, डॉ. कोमलचंद जैन, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी, 2013 4. प्राकृत- संस्कृत - हिंदीशब्दकोष – डॉ. उदयचंद जैन, न्यू भारतीय बुक कारपोरेशन, दिल्ली 5. प्राकृतभाषा से अनुप्राणित भारतीय भाषाएँ – डॉ. ज्योतिबाबू जैन- भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली 2022 6. गाहारयणकोस- संपादक- डॉ. सुमत कुमार जैन- राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नईदिल्ली 2018	

बी. ए. प्राकृत पंचम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT7101T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V(B)
पाठ्यक्रम का नाम	सामायिक एवं ध्यान : चिंतन और प्रविधि
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	NHEQF Level 5.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	6 credits
पाठ्यक्रम का प्रकार	Discipline Specific Elective Course (DSE) in Prakrit
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	75(60 Lectures+ 15 formative and Diagnostic Assessment) and 15 tutorials.
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	High level
पाठ्यक्रम उद्देश्य	1. इस पत्र में ध्यान की महत्ता एवं चित्त की एकाग्रता, मनोविकारों का अभाव, रचनात्मकता, भावनात्मक स्थिरता आदि का अध्ययन करेंगे। 2. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ध्यान की विविध-विधियों का भी अध्ययन करेंगे।

पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	ध्यान ज्ञान को वलवान बनाता है जिससे विद्यार्थियों में चित्त की एकाग्रता में बृद्धि, मनोविकारों का अभाव, रचनात्मकता, भावनात्मक स्थिरता आदि का विकास होगा। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ध्यान अत्यंत उपयोगी एवं चरित्र निर्माण में सहकारी है इसकी विविध विधियों का ज्ञान विद्यार्थियों को हो सकेगा।

पाठ्यक्रम		**Study Hours 90**
इकाई- I	पंच परमेष्ठी एवं सामायिक पाठ : स्वरुप एवं प्रविधि	18
इकाई- II	ध्यान एक परिशीलन: स्वरुप भेद एवं प्रविधि	18
इकाई- III	ध्यान विषयक साहित्य एवं वैशिष्ट्य आगम एवं आगमेतर	18
इकाई- IV	प्रेक्षाध्यान : स्वरुप, प्रविधि एवं महत्व	18
इकाई- V	समीक्षण एवं अर्हम्ध्यान: स्वरुप, प्रविधि एवं महत्व	18
सहायकपुस्तकें	1. ज्ञानार्णव – आचार्य शुभचंद्र – श्रीमद राजचंद आश्रम, अगास – 1975 2. अर्हम ध्यान योग – मुनि प्रणम्य सागर – ॐ अर्हम सोशल वैल्फैर फाउंडेशन, मंदसोर – 2018 3. ध्यान विचार – आचार्य कलापूर्ण सूरी, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, 1997 4. ध्यान एक दिव्य साधना – आचार्य डॉ. शिवमुनि 5. ध्यानशतक, जिनभद्रगणि, वीर सेवा मंदिर, नई दिल्ली – 1976	

बी. ए. प्राकृत पंचम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	SEH7319T
पाठ्यक्रम क्रमांक	V
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत साहित्य में पुरातत्व एवं उसका ऐतिहासिक-सामाजिक अध्ययन
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	NHEQF Level 5.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	6 credits
पाठ्यक्रम का प्रकार	Skill Enhancement Course
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	15 Lectures and 15 tutorials.
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	High level
पाठ्यक्रम उद्देश्य	**1 .** प्राकृत भाषा में रचित ऐतिहासिक पुरासंपदा का अध्ययन करेंगे | 2. इस पत्र में सम्राट अशोक, सम्राट खारवेल एवं घटयाल अभिलेखों का ऐतिहासिक-सामाजिक अध्ययन अध्ययन करेंगे |
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. ऐतिहासिक विकासक्रम की जानकारी एवं महापुरूषो के अवदान को समझा जा सकेगा | 2. शिलालेखो के अध्ययन से भारतीय पुरासंपदा का प्रमाणिक जानकारी होगी |

पाठ्यक्रम		Study Hours 90
इकाई- I	प्राकृत के प्रमुख अभिलेखों का सामान्य परिचय	18
इकाई- II	अशोक के शिलालेखों का ऐतिहासिक-सामाजिक अध्ययन एवं महत्ता	18
इकाई- III	खारवेल शिलालेख की ऐतिहासिक-सामाजिक महत्ता	18
इकाई- IV	घटयाल अभिलेख का परिचय एवं महत्व	18
इकाई- V	प्राकृत शिलालेखों में अंकित जन-उपयोगी तथ्यों का अध्ययन एवं उपयोगिता	18
सहायकपुस्तकें	1. प्राकृत साहित्य का इतिहास- डॉ. जगदीशचन्द जैन, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी – 1961 2. जैन पाण्डुलिपि एवं शिलालेख एक परिशीलन – प्रो. राजाराम जैन, 3. जैन शिलालेख संग्रह - डॉ. हीरालाल जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली 4. प्राकृत काव्य प्रसून – डॉ. ज्योतिबाबू जैन –जैनसंस्कृति शोध संस्थान, इंदौर 2020 5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य –राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मंडल, जयपुर	

बी. ए. प्राकृत षष्ट सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT7102T
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI(A)
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत साहित्य में जीवनमूल्य शिक्षा
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	NHEQF Level 5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	6 credits
पाठ्यक्रम का प्रकार	Discipline Specific Elective Course (DSE) in Prakrit
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	75 (60 Lectures+ 15 formative and Diagnostic Assessment) and 15 tutorials.
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	High level
पाठ्यक्रम उद्देश्य	1. इस पत्र में भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के विकास में प्राकृतभाषा का योगदान विषयक अध्ययन करेंगे। 2. प्राकृत साहित्य के अख्यानमणिकोश एवं सुरसुन्दरीचरियं के कुछ अंशों का जीवनमूल्यपरक सन्दर्भों की दृष्टि से अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। 3. प्राकृत साहित्य के वज्जालग्ग, गाहासत्तसई, पउमचरियं एवं समणसुतं के कुछ अंशों का जीवनमूल्यपरक अध्ययन इस पत्र के द्वारा किया जायेगा। 4. प्राकृतभाषा की वाक्यरचना का अध्ययन किया जायेगा

पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. इस पत्र के अध्ययन से भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के विकास में प्राकृतभाषा का योगदान विषयक जानकारी प्राप्त होगी। 2. इस पत्र के अध्ययन से प्राकृत साहित्य में वर्णित जीवनमूल्यपरक सन्दर्भों का ज्ञान होगा। विद्यार्थियों में प्राकृतसाहित्य की समझ विकसित होगी।

पाठ्यक्रम		**Study Hours 90**
इकाई- I	आचारंग में अहिंसा (प्रथम अध्यन का परिचय)	18
इकाई- II	वज्जालग्ग (जयवल्लभ) - सज्जन स्वरूप गाथा1-11	18
इकाई- III	गाहासत्तसई (हाल) - गाथा माधुरी, गाथा1-16 समणसुतं - चयनिका - शिक्षानीति गाथा1-15	18
इकाई- IV	आख्यानमणिकोश (आम्रदेवसूरी) - शिक्षा विवेक गाथा1-17	18
इकाई- V	प्राकृतसाहित्य में वर्णित- पर्यावरण, समाज, शिक्षा, विज्ञान एवं अध्यात्म	18
सहायक पुस्तकें	1. प्राकृत काव्यमंजरी - प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर 2005 2. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण - प्रो. प्रेमसुमन जैन, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर 2022 3. प्राकृतसाहित्य के व्यावहारिक पक्ष - डॉ. ज्योतिबाबू जैन, भारतीय प्राकृत स्कॉलर सोसाईटी, उदयपुर 4. प्राकृत समय - डॉ. ज्योतिबाबू जैन, भारतीय ज्ञानपीठ नईदिल्ली 2022	

बी. ए. प्राकृत षष्ट सेमेस्टर 2023– 2024	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	PKT7103T
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI(B)
पाठ्यक्रम का नाम	प्राकृत साहित्य की उपादेयता एवं समसामायिक संदर्भ
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	NHEQF Level 5.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	6 credits
पाठ्यक्रम का प्रकार	Discipline Specific Elective course (DSE) in Prakrit
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	75 (60 Lectures+ 15 formative and Diagnostic Assessment) and 15 tutorials.
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	High level
पाठ्यक्रम उद्देश्य	1. प्राकृत साहित्य के वैभव एवं लोकसंस्कृति के सन्दर्भों की दृष्टि से अध्ययन इस पत्र के माध्यम से होगा। 2. प्राकृत साहित्य का उपदेयता व मूल्यपरक अध्ययन इस पत्र के द्वारा किया जायेगा।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. इस पत्र के अध्ययन से प्राकृतसाहित्य की उपादेयता एवं समसामायिक संदर्भ का ज्ञान होगा। 2. प्राकृत साहित्य के अध्ययन से मूल्यों की जानकारी होगी।

पाठ्यक्रम		Study Hours 90
इकाई- I	प्राकृत साहित्य पूर्व पीठिका - एक परिचय	18
इकाई- II	प्राकृतसाहित्य में श्रावकधर्म की उपादेयता	18
इकाई- III	प्राकृतसाहित्य में आर्थिक चिंतन और उपयोगिता	18
इकाई- IV	प्राकृतसाहित्य में मूल्यात्मक चिंतन की समसामायिकता	18
इकाई- V	प्राकृतसाहित्य में ज्योतिषी चिंतन	18
सहायक पुस्तकें	1. श्रावक धर्म दर्शन – उपाध्याय पुष्कर मुनि, श्री तारकगुरु जैन ग्रंथालय, उदयपुर 1978 2. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी 2014 3. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी- 1961 4. प्राकृत साहित्य के व्यावहारिकपक्ष – डॉ. ज्योतिबाबू जैन, भारतीय प्राकृत स्कॉलर सोसाईटी, उदयपुर 2019	

बी. ए. प्राकृत षष्ट सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम कूट संख्या	SEH7320T
पाठ्यक्रम क्रमांक	VI
पाठ्यक्रम का नाम	भारतीय भाषाओँ के विकासक्रम में प्राकृत
पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर	NHEQF Level 5.5
पाठ्यक्रम की क्रेडिट	2 credits
पाठ्यक्रम का प्रकार	Skill Enhancement Course
पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार	15 Lectures and 15 tutorials.
पाठ्यक्रम पठन की पूर्व – योग्यता	High level
पाठ्यक्रम उद्देश्य	1.प्राकृत भाषा की पुरा से लेकर आधुनिक तक - विकासक्रम का अध्ययन करेंगे । 2. भाषाओँ के ऐतिहासिक विकासक्रम का भी अध्ययन करेंगे ।
पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम	1. प्राकृत भाषा की पुरा व आधुनिक विकासक्रम को समझा जा सकेगा । 2. इस पत्र के अध्ययन से प्राचीन भारतीय भाषाओं की प्रमाणिक जानकारी होगी ।

पाठ्यक्रम		Study Hours 90
इकाई- I	भारतीय भाषाओँ का सामान्य परिचय	18
इकाई- II	भारतीय भाषाओँ के अध्ययन का महत्व	18
इकाई- III	वैदिक भाषा और प्राकृत भाषा में समानता के तत्त्व	18
इकाई- IV	प्राकृत भाषा के भेद-प्रभेद	18
इकाई- V	अपभ्रंश एवं आधुनिक भाषाओं का सामान्य अध्ययन	18
सहायकपुस्तकें	1. प्राकृत साहित्य का इतिहास- डॉ. जगदीशचन्द जैन, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी – 1961 2. प्राकृत भाषा एवं साहित्य –राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मंडल, जयपुर 3. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी- 2014 4. प्राकृत भाषा से अनुप्राणित भारतीय भाषाएँ – संपादन - डॉ. ज्योतिबाबू जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली - 2022 5. प्राकृत स्वंय शिक्षक - डॉ. प्रेम सुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर	